विश्व अस्थमा दिवस | खराब स्वास्थ्य से जूझ रहे देश के 35 फीसदी बच्चे, कम उम्र में ही घट रही फेफड़े की कार्यक्षमता

भारत में दो करोड़ व दुनिया में 30 करोड़ अस्थमा से पीड़ित

नई दिल्ली (एजेंसी)। बढ़ते वायु प्रदूषण के कारण अस्थमा आज दुनिया की प्रमुख समस्याओं में से एक बन गया है। दुनियाभर में इस बीमारी से करीब 30 करोड़ लोग प्रभावित है। अकेले भारत में इनकी संख्या दो करोड़ पार कर गई है।

ये हैं लक्षण

कफ जमना, सूखी खांसी, छाती में जकड़न, छाती में दर्द, रात व सुबह में खांसी होना अस्थमा के लक्षण हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि उपचार के तौर पर पी-फ्लोमीटर उपकरण से घर में ट्रीटमेंट हो सकता है। जबकि स्पाइरोमीटर उपकरण अस्पताल में मौजूद रहते हैं। उनके अनुसार बुजुर्गों में अस्थमा पूरी तरीके से ठीक नहीं हो सकता, लेकिन इसे कंट्रोल कर सकते हैं।

कहां कितना असर

शहर	खराब	बेहद खराब
बंगलुरु	14 प्रतिशत	22 प्रतिशत
कोलकाता	09 प्रतिशत	26 प्रतिशत
मुंबई	13 प्रतिशत	14 प्रतिशत

ये हैं वजहें

अस्थमा मुख्य रूप से धूल, धुआं, धुंध, तापमान में परिवर्तन, कार्बन के ब्लैक पार्टिकल्स आदि से होता है। नाक के जरिए ये कण शरीर में पहुंचकर रेस्पीरेटरी सिस्टम (श्वसन तंत्र) को प्रभावित करते हैं। अस्थमा दीर्घकालिक बीमारी है, जिसमें लंबे समय तक इलाज की जरूरत होती है।

स्क्रीनिंग बताएगी फेफड़े का स्वास्थ्य

हील फाउंडेशन के डॉ. प्रीतेश के अनुसार फेफड़ों की स्क्रीनिंग से पता चलता है कि एक बार में कितनी हवा फेफड़ा ले सकता है। फिर कितनी तेजी से इसे बाहर निकाल सकता है। यही नहीं स्क्रीनिंग में यह भी पता चलता है कि फेफड़ा एक बार में कितनी मात्रा में आक्सीजन लेकर कार्बनडाइ ऑक्साइड को कितनी जल्दी छोड़ सकता है। स्क्रीनिंग (एलएचएसटी) का परिणाम मानकों से कम होने पर मान लिया जाता है कि संबंधित व्यक्ति या बच्चे का फेफड़ा कमजोर है।

35 फीसदी बच्चों के फेफड़े प्रभावित

राजधानी दिल्ली समेत देश के 35 प्रतिशत बच्चे खराब स्वास्थ्य की समस्या से जूझ रहे है। एक चौकाने वाली रिपोर्ट में इस बात का खुलासा हुआ है कि बच्चों के फेफड़ों की गुणवत्ता उनके उम्र के लिहाज से काफी खराब है। इस मामले में दिल्ली की हालत भी अच्छी नहीं है। ब्रीथ ब्लू 15 के नाम से बच्चों पर किए गए देशव्यापी सर्वे में अकेले दिल्ली के 21 प्रतिशत बच्चों के फेफड़े की क्षमता बहुत कमजोर है। यह निष्कर्ष बच्चों के फेफड़ों की स्क्रीनिंग (एलएचएसटी) से निकाला गया है जिसमें सिर्फ राजधानी के ही लगभग 19 प्रतिशत बच्चों का स्वास्थ्य बेहद खराब पाया गया। पूरे देश में किए गए सर्वे में आठ से 14 उम्र के बीच दो हजार छात्रों को शामिल किया गया। सर्वे के निष्कर्षों के बाद फेफड़े से संबंधित जो बातें सामने आ रही है उससे साफ है कि इसकी जड़ में रोजमर्रा का बच्चों का खान-पान व वायु प्रदूषण है।

NaiDuniya (Delhi Edition)
5th May 2015